पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2021-23 प्रकाशित:01.10.2021 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

शोक शोक

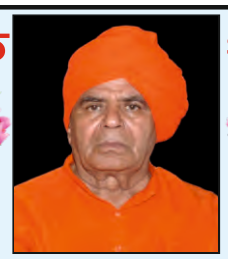

मूर्धन्य आर्य संन्यासी

स्वामी चन्द्रवेश जी

का दिनांक 29 सितम्बर 2021 को निधन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्

की विनम्र श्रद्धांजलि

वर्ष-38 अंक-9 आश्विन-2078 दयानन्दाब्द 198 1 अक्टूबर से 15 अक्टूबर 2021 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.10.2021, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल में भी 290वां वेबिनार सम्पन्न

महर्षि दयानन्द और महिला सशक्तीकरण पर गोष्ठी सम्पन्न

दो परिवारों की दहलीज पर खड़ी नारी दोनों को आलोकित करती है —डॉ. वीना गौतम (वरिष्ठ साहित्यकार)

बुधवार 29 सितम्बर 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'महर्षि दयानंद और महिला सशक्तिकरण' पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कॅरोना काल में 290 वा वेबिनार था। शिक्षाविद,साहित्यकार डॉ.वीणा गौतम ने कहा कि 'नारी'शब्द में सृष्टि के पॉच तत्त्वों को लक्षित करते हुए कि दो अक्षरकृ न और र आकाश और धरती,दो मात्राएँकृआ और ई जल और अग्नि के बीच अन्तरूसलिला के रूप में प्रेम,करूणा,श्रद्धा प्रवाहित हैं। नारी का एक और भी अर्थ बताया कि नारी दो परिवारों की दहलीज़ पर खड़ी नारी दोनों परिवारों कोआलोकित—प्रकाशित करती है। ऐसी नारी की दुर्दशा देख कर महर्षि दयानंद जी का ह्रदय द्रवित हो उठा। नारी—नारायणी बाल— विवाह, अनमेल विवाह बहुविवाह से ही घिरी हुई नहीं थी बल्कि बढ़ती विधवाओं की संख्या ने भी नारी का गौरव क्षीण कर दिया था। ऐसे में महर्षि के आगमन ने नारी को नारायणी का स्थान दिलाने के लिए अपना शंख बजाया कि बालिकाएँ सप्तपदी न लें सकें, विधवाओं का पुनर्विवाह हो, सती प्रथा का उन्मूलन हो और बहुविवाह पर रोक लगे। उन्होंने शिक्षा को अनिवार्य बताया,कन्या गुरूकुल की स्थापना हो। वेदों के अध्ययन और उन्हें यज्ञोपवीत धारण करने पर बल दिया। आज 'नारी तू नारायणी ' जिस प्रतिष्ठा को प्राप्त किए हैं उसका सारा श्रेय महर्षि को देते हुए उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। उन्होंने कहा कि दयानंद जी के ही कारण आज 'मानस'की चौपाइयों पर खोज करने पर पता चला है कि 'ढोर गंवार शूद्र पशुऔ नारी ' प्रक्षिप्त है जबकि सही यह है— ढोल ग्वार क्षुब्ध पशु रारी ' है।नारी शक्ति का प्रतीक थी लेकिन महर्षि दयानन्द के कारण वह शक्ति का प्रतीक पुनरूबन रही है जिसका उदाहरण 'स्नेहा दूबे' का संक्षिप्त—सारगर्भित भाषण क्वाड की बैठक में देखने को मिल रहा है।नारी की ऊर्जा और शक्ति की नई परिभाषा महर्षि दयानन्द के कारण ही सम्भव हो पाई है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि आर्य समाज के माध्यम से नारी शिक्षा के लिए अनेकों गुरुकुल,विद्यालय, महाविद्यालय चल रहे हैं। महर्षि दयानंद ने नारी की शिक्षा, पठन पाठन पर बल दिया। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि आज समाज मे नारी पुरुषों के साथ हर क्षेत्र में कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं इसका श्रेय महर्षि दयानंद को जाता है। गायक नरेन्द्र आर्य सुमन,रविन्द्र गुप्ता, प्रवीना ठक्कर, प्रवीन आर्या,रजनी चुघ,रचना वर्मा,रजनी गर्ग,कुसुम भंड़ारी, राज चावला, जनक अरोड़ा, रेखा गौतम आदि ने गीत सुनाये । आर्य नेता ओम सपरा के जन्मदिन पर रीता जयहिंद, आस्था आर्या,महेन्द्र भाई, राजकुमार भंडारी आदि ने बधाई दी ।

114 वें जन्मदिन पर शहीद भगत सिंह को किया नमन

भगतसिंह का बलिदान युवाओं का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा—राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

सोमवार 27 सितम्बर 2021,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी शहीद भगत सिंह के 114 वें जन्मदिन पर ऑनलाइन श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उल्लेखनीय है कि भगत सिंह का जन्म 27 सितम्बर 1907 को लायलपुर(पाकिस्तान) में हुआ था। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि सदियों तक शहीद भगत सिंह का बलिदान युवाओं का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। आपने शक्तिशाली ब्रिटिश शासन की नींव हिला डाली इस 23 वर्ष के नोजवान से ब्रिटिश सरकार घबराती थी। साइमन कमीशन के बहिष्कार के प्रदर्शन में लाला लाजपतराय के बलिदान से आहत युवकों ने बदला लेने का निश्चय किया और लाहौर में 17 सितम्बर 1928 को जे पी सांडर्स की गोली मारकर हत्या कर दी। केन्द्रीय संसद में 8 अप्रैल 1929 को बटुकेश्वर दत्त के साथ बम और पर्चे फेंके और भागे नहीं उनका मानना था कि बहरे कानों को सुनाने के लिए धमाके की आवश्यकता होती है। गांधी जी के असहयोग आंदोलन स्थगित करने के कारण वह क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद, सुखदेव, राजगुरु के साथ जुड़ गए। आज भगत सिंह के जीवन से प्रेरणा लेकर राष्ट्र रक्षा का संकल्प प्रत्येक भारतीय को लेना होगा तभी हम अपने परिवार, घर, फैक्टरियों व संस्कृति की रक्षा कर पायेगे। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि क्रांतिकारियों के जीवन चरित्र को पाठ्यक्रम में पढ़ाने की आवश्यकता है जिससे वह राष्ट्र के महान क्रांतिकारियों से परिचित हो सकें जिनके कारण हम आजादी की सांस ले रहे हैं। आचार्य महेन्द्र भाई ने कहा कि भगत सिंह का पूरा परिवार ऋषि दयानन्द का भक्त था जिसके कारण परिवार में स्वतंत्रता के लिए बीज बौने के संस्कार मिले। गायिका रजनी गर्ग,प्रवीन आर्या, रजनी चुघ, दीप्ति सपरा,जनक अरोड़ा,रवीन्द्र गुप्ता,प्रवीना ठक्कर,नरेश खन्ना,नरेंद्र आर्य सुमन के गीत हुए। प्रमुख रूप से आनन्द प्रकाश आर्य(हापुड़),वीना आर्या,आर पी सूरी,वेदप्रकाश आर्य,देवेंद्र भगत, ओम सपरा,आस्था आर्या आदि उपस्थित थे।

ईश्वर प्रदत्त वेद-ज्ञान के जन-जन में प्रचार के लिए समर्पित ऋषि दयानन्द

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

वेद कहानी किस्से अथवा किसी धर्म प्रचारक मनुष्य के उपदेशों का ग्रन्थ नहीं है अपितु यह इस संसार की रचना करने व इसका पालन कर रहे सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान एवं सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मा का दिव्य ज्ञान है जो उसने सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा को अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न कर प्रदान किया था। सृष्टि के आरम्भ में प्रथम पीढ़ी से ही वेदाध्ययन व वेद प्रचार की परम्परा आरम्भ हो गई थी। वेद सद्ज्ञान का पर्याय होने के कारण सृष्टि के आरम्भ से महाभारत युद्ध तक के लगभग 1.96 अरब वर्षों तक सृष्टि के सभी मनुष्यों के धर्म व आचरण के ग्रन्थ रहे और उसके बाद भी भारत के अधिकांश लोगों के धर्मग्रन्थों में शीर्ष स्थान पर विद्यमान रहे। आज भी सभी सत्य विद्याओं से युक्त होने के कारण विश्व के निष्पक्ष विद्वानों के यही चार वेद माननीय एवं आदरणीय ग्रन्थ हैं। ऋषि दयानन्द (1825–1883) गुजरात के मौरवी नगर के टंकारा ग्राम के निवासी शिवभक्त पिता करषनजी तिवारी की सन्तान थे। अपनी आयु के चौदहवें वर्ष में अपने पिता की आज्ञा से उन्होंने शिवरात्रि का व्रत रखा था। रात्रि को अपने ग्राम के शिव मन्दिर में पिता के साथ जागरण करते हुए उन्होंने मन्दिर की शिव की पिण्डी वा मूर्ति पर चूहों को उछलते–कूदते देखा था। इस दृश्य से उत्पन्न उनकी आशंकाओं का समुचित उत्तर न मिलने के कारण मूर्तिपूजा के प्रति उनका विश्वास समाप्त हो गया था। कुछ काल बाद उनकी बहिन और चाचा की मृत्यु ने दयानन्द जी में वैराग्य उत्पन्न कर दिया और यह सच्चे शिव और मृत्यु पर विजय के उपाय जानने और उनका आचरण कर जन्म–मरण से छूटने के लिये प्रयत्नशील हो गये। उनके पुरुषार्थ व तप सफल हुआ और ईश्वर ने उनकी इच्छा को पूरा किया। वह ईश्वर के सत्यस्वरूप को जानकर योग विधि से उपासना कर ईश्वर का साक्षात्कार करने में भी सफल हुए थे।

ईश्वर ने उनके हृदय में विद्या प्राप्ति के प्रति भी तीव्र अनुराग उत्पन्न किया था। सौभाग्य से उन्हें विद्या व वेद–व्याकरण के सूर्य मथुरा के प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ जो अपने समय के वेद–वेदांग व्याकरण के शीर्ष विद्वान वा प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य थे। उन्हीं से अष्टाध्यायी–महाभाष्य एवं निरुक्त का अध्ययन कर आपने वेद के रहस्यों को जानने की योग्यता प्राप्त की थी। सौभाग्य से उन्हें विद्या की प्राप्ति के कुछ समय बाद प्रयत्न करने पर विलुप्त वेदों की संहिताओं की प्राप्ति हुई जिसका अध्ययन कर वह देश और संसार से धार्मिक व सामाजिक जगत में विद्यमान अविद्या व उसके अन्धकार को दूर करने में आन्दोलनरत हुए। वेदों की प्रतिष्ठा व उचित सम्मान ही उनके जीवन का उद्देश्य प्रतीत होता है। इसके अन्तर्गत अन्धविश्वासों का उन्मूलन, सबको वेदाध्ययन का समान अधिकार प्रदान करना, असत्य का खण्डन तथा सत्य का मण्डन सहित देश में शिक्षा प्रसार व ग्रन्थ लेखन के माध्यम से वेदों की प्रतिष्ठा व प्रचार के कार्य सम्मिलित हैं। स्वामी दयानन्द ने महाभारत युद्ध के बाद वैदिक धर्म में आयी समस्त विकृतियों को दूर किया था। वेदों को धर्म का आदि मूल तथा सृष्टि की आदि से प्रलय अवस्था तक का सर्वोपरि व एकमात्र धर्मग्रन्थ भी सिद्ध किया था।

वेद के प्रचार व प्रतिष्ठा के लिये ही उन्होंने 10 अप्रैल सन् 1875 को मुम्बई में आर्यसमाज आन्दोलन की स्थापना की थी जिसका उद्देश्य वेद प्रचार के माध्यम से अविद्या का नाश तथा विद्या की वृद्धि करना था। आर्यसमाज की स्थापना कर ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज को दस नियम एवं उद्देश्य दिये। यह नियम इतने महत्वपूर्ण है कि हम इनका यहां उल्लेख करना उचित एवं आवश्यक समझते हैं। प्रथम नियम है सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है। दूसरा नियम है ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है। नियम 3– वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। नियम 4– सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। नियम 5– सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये। नियम 6– संसार का उपकार करना (आर्य) समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् सबकी शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। नियम 7– सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये। नियम 8– अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। नियम 9– प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये किन्तु सबकि उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये। नियम 10– सब मनुष्यों को सार्वजनिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतन्त्र रहें।

आर्य समाज के यह सभी नियम तर्क व युक्तियों पर आधारित हैं। हमें संसार की किसी धार्मिक व सामाजिक संस्था के ऐसे सुन्दर नियम दिखाई नहीं देते। पहले ही नियम में परमेश्वर को इस सृष्टि का कर्ता व रचयिता बताया गया है। सृष्टि के सभी पदार्थों की रचना भी ईश्वर ने ही की है, इसका बोध भी पहले नियम से होता है। प्रथम नियम मं। सब विद्याओं का मूल भी परमात्मा को बताया गया है। ऋषि दयानन्द के समय में ईश्वर के स्वरूप सहित गुण, कर्म व स्वभाव के विषय में भारी अज्ञानता व भ्रम थे। अनेक मत तो ईश्वर को मनुष्य के समान ही एक व्यक्ति की आकृति के रूप में ही देखते थे। कोई ईश्वर को वैकुण्ठ में, कोई मूर्ति में, कोई चौथे आसमान पर तो कोई उसे सातवें आसमान पर बताता था। ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज के दूसरे नियम में घोषणा कर ईश्वर को निराकार एवं सर्वव्यापक बताया और उसे वेद के प्रमाणों और तर्कों से भी सिद्ध किया। योगदर्शन के अनुसार उपासना करने से साधक को ईश्वर का प्रत्यक्ष वा साक्षात्कार भी होता है। यह ईश्वर का प्रत्यक्ष प्रमाण होता है। इसके अतिरिक्त भी ईश्वर के गुण सृष्टि में सर्वत्र प्रकाशित व दृष्टिगोचर हो रहे हैं। इन गुणों के ज्ञान से इन गुणों के आश्रय वा गुणी परमात्मा का ज्ञान होता है। इस विषय में ऋषि प्रदत्त एक नियम है कि रचना विशेष व उनमें विद्यमान गुणों को देखकर उन गुणों के अधिष्ठाता ईश्वर का प्रत्यक्ष होता है।

ऋषि दयानन्द की सभी मान्यतायें व सिद्धान्त वेदों पर पूर्णतः आधारित हैं। उन्होंने वेदों को स्वतः प्रमाण और अन्य ग्रन्थों को वेदानुकूल होने पर परतः प्रमाण के रूप में स्वीकार किया है। वेद विषयक यह मान्यता सृष्टि के आरम्भ से सभी ऋषियों को मान्य थी। ऋषि दयानन्द ने अपने विशाल ज्ञान भण्डार एवं योग की उपलब्धियों के आधार पर वेदों का सृष्टि क्रम वा सृष्टि के नियमों के अनुकूल एवं तर्क व युक्तियों पर आधारित वेद–भाष्य प्रस्तुत किया है। उनके वेद–भाष्य को देखकर ही उसकी विशेषताओं का अनुमान किया जा सकता है। इतना जान लें कि ऋषि ने वेद के मन्त्रों का भाष्य करते हुए पहले मन्त्र का सन्धि विच्छेद किया है। फिर उसका अन्वय किया है। इसके बाद अन्वय के अनुसार सभी पदों का अर्थ जिसे पदार्थ कहते हैं, प्रस्तुत किया है। पदार्थ के बाद ऋषि ने मन्त्र का भावार्थ भी दिया है। ऋषि ने पदार्थ व भावार्थ संस्कृत व हिन्दी दोनों भाषाओं में पृथक पृथक प्रस्तुत किये हैं। इससे वेदों के प्रत्येक मन्त्र के एक एक–पद व शब्द का अर्थ पाठक को हृदयंगम हो जाता है। संस्कृत न जानने वाले हमारे हिन्दी पठित सभी बन्धु भी वेद के सभी शब्दों वा पदों से परिचित होने के साथ उनके अर्थों से भी परिचित हो जाते हैं। यह ऋषि दयानन्द द्वारा एक प्रकार की क्रान्ति की गई थी जिसे वेद–क्रान्ति का नाम दे सकते हैं। ऋषि दयानन्द से पूर्व ऐसा भाष्य न वेदों का सुलभ था और न ही उपनिषद एवं दर्शन ग्रन्थों का। ऋषि के शिष्य व अनुयायियों ने संस्कृत के प्रायः सभी ग्रन्थों का वेदभाष्य की शैली पर पदार्थ सहित भावार्थ भी प्रस्तुत कर वैदिक साहित्य की प्रशंसनीय सेवा की है। उन्होंने न केवल वेद भाष्य ही किया अपितु अन्य अनेक ग्रन्थों का प्रणयन भी किया है। ऋषि दयानन्द के रचित प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, व्यवहारभानु, पंचमहायज्ञविधि एवं गोकरूणानिधि आदि हैं। इन सभी ग्रन्थों के माध्यम से उन्होंने वेदों का प्रायः सम्पूर्ण व अधिकतम ज्ञान अपने ग्रन्थों में प्रस्तुत कर दिया है।

ऋषि दयानन्द के जीवन से प्रेरणा लेकर और उनके द्वारा प्रचारित गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से अनेक विद्वान आर्यसमाज को मिले हैं जिन्होंने वैदिक साहित्य में अपूर्व वृद्धि की है। विगत 138 वर्षों में आर्यसमाज के विद्वानों ने जो साहित्य लिखा है उस पूरे साहित्य को पढ़ना भी सभी साहित्य प्रेमियों के लिये सम्भव नहीं है। आज भी अनेक विद्वान वैदिक साहित्य की वृद्धि में लगे हुए हैं। वेद भाष्य हिन्दी में होने के कारण कोई भी हिन्दी जानने वाला व्यक्ति सत्यार्थप्रकाश पढ़कर वेदों का तात्पर्य जानकर वेदज्ञान से लाभ उठा सकता है। हमने भी ऋषि दयानन्द सहित आर्य विद्वानों के ग्रन्थों को पढ़ा व उनके उपदेशों को सुना है। यही हमारे जीवन में वेद विषयक जानकारी प्राप्त करने का मुख्य साधन रहा है। कोई भी व्यक्ति हिन्दी के अक्षरों का ज्ञान प्राप्त कर हिन्दी पढ़ने की योग्यता प्राप्त कर ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य की सहायता से वेदों का विद्वान बन सकता है। वेद का विद्वान बनने की आंशिक पूर्ति सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से हो जाती है। ऋषि दयानन्द का मानव जाति पर यह बहुत बड़ा उपकार है कि उन्होंने वेदों सहित मत–मतानतरों की वास्तविकता को जानने के लिये सत्यार्थप्रकाश जैसा अपूर्व ग्रन्थ हमें दिया है। ऋषि दयानन्द ने वेदों का प्रचार कर हिन्दू जनता को ईसाई एवं इस्लाम मत में मतान्तरित होने से बचाया है। इतना ही नहीं वेदों की महत्ता को जानकर बहुत से भिन्न–भिन्न मतों के विद्वान वैदिक धर्मी बने हैं। आर्यसमाज किसी प्रकार के अन्धविश्वास व मिथ्या परम्पराओं सहित जन्मना जातिवाद को नहीं मानता। संसार के सभी मनुष्य ईश्वर की सन्तानें हैं और आर्यसमाज सभी को अपना भ्राता व भगिनी स्वीकार करता है। आर्यसमाज का 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना में दृढ़ विश्वास है। आर्यसमाज के अनुयायी किसी भी सम्प्रदाय के अनुयायी के साथ बैठकर भोजन कर सकते हैं और अपने पुत्र व पुत्रियों का वैदिक धर्म स्वीकार किये हुए अन्य मत के बन्धुओं से विवाह सम्बन्ध भी कर सकते हैं। ऐसे अनेक उदाहरण आर्यसमाज में विद्यमान है। आर्यसमाज ने ही युवावस्था में गुण–कर्म–स्वभाव के आधार पर विवाहों को प्रचलित किया था जिससे देश में जन्मना जाति में ही विवाह करने के बन्धन ढीले पड़े हैं व समाप्त हो रहे हैं।

ऋषि दयानन्द ने वेदों सहित समस्त उपलब्ध वैदिक साहित्य का ही अध्ययन किया था। वह अंग्रेजी भाषा के प्रयोग से अपरिचित थे। उन्होंने ही सर्वप्रथम देश को स्वराज्य, सुराज्य व देश की स्वतन्त्रता का मन्त्र दिया था जिसकी प्रेरणा उन्होंने वेदों से प्राप्त की थी। उन्होंने विदेशी राज्य को स्वदेशीय राज्य की तुलना में सर्वोपरि उत्तम बताया था। अंग्रेजी राज्य में इस प्रकार की घोषणा करना मृत्यु को निमंत्रण देना था तथापि निर्भीक दयानन्द ने अपने प्राणों की चिन्ता किये बिना देश के हित में यह घोषणा की थी। उनकी मृत्यु के षडयन्त्र में कौन–कौन से कारण थे, इसका पूरा–पूरा पता नहीं चलता। सभी अन्धविश्वासों एवं मिथ्या परम्पराओं का उन्मूलन भी ऋषि दयानन्द ने किया। शिक्षा व विद्या के प्रसार के लिये उन्होंने गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को प्रोत्साहित किया। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की विशेषता यह है कि इसमें दीक्षित युवक वेदज्ञान से परिपूर्ण होते हैं। देश से अविद्या दूर करने के लिये आर्यसमाज ने देश के सभी भागों में बड़ी संख्या में डी0ए0वी0 स्कूल–कालेज एवं गुरुकुल स्थापित किये। देश की आजादी सहित समाज को अन्धविश्वासों से मुक्त कराने तथा सत्य के ग्रहण और असत्य का त्याग करने की प्रेरणा करने में ऋषि दयानन्द का सर्वोपरि योगदान है। वेदों के शीर्ष विद्वान और महाभारत के बाद वेदों के सत्य अर्थों के प्रथम अधिकारी प्रचारक व समाज सुधारक ऋषि दयानन्द का हम हृदय से अभिनन्दन एवं वन्दन करते हैं और इस लेख को विराम देते हैं।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

113 वी जयंती पर राष्ट्रीय कवि रामधारी सिंह दिनकर को किया नमन

वैचारिक क्रांति, सांस्कृतिक चेतना व राष्ट्रीयता के प्रचारक थे 'दिनकर' –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

वीरवार 23 सितम्बर 2021,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की 113 वीं जयंती पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। उल्लेखनीय है कि श्री दिनकर का जन्म बिहार के बेगूसराय में 23 सितम्बर 1908 को हुआ था। वह तीन बार राज्य सभा के सदस्य रहे,उन्हें पदमविभूषण से सम्मानित किया गया व 1999 में सम्मानार्थ भारत सरकार द्वारा डाक टिकट भी जारी किया गया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर की 113 वीं जयन्ती पर कहा की ओजस्विता, राष्ट्रीयता,वैचारिक प्रखरता और सांस्कृतिक चेतना के आधार स्तम्भ थे रामधारी सिंह दिनकर। स्वतंत्रता पूर्व उन्हें विद्रोही कवि की उपमा दी गई ।ओज,वीर रस व राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत अपनी कविताओं से 'दिनकर' जी ने राष्ट्रीयता की भावना जन जन तक पहुंचाने का कार्य किया था।उन्होंने आर्य समाज के लिए कहा था कि आर्य समाज ने आर्यावर्त के साधारण से भी साधारण जनमानस को भी अपनी ओर आकर्षित किया है। उनकी कालजयी कविताएं साहित्य प्रेमियों को ही नही अपितु समस्त देशवासियों को निरंतर प्रेरित करती रहेंगी। आज की कविता श्रंगार रस व चापलूसी की कविता बनती जा रही हैं, उनके लिये दिनकर जी प्रेरणा का स्रोत्र हो सकते है।आज के कवियों को दिनकर जी से प्रेरणा लेकर राष्ट्र व आम जन के लिए लिखना चाहिए और स्वाभिमानी रहना चाहिए।

आशुकवि विजय गुप्त की प्रेरणा सभा सम्पन्न

सोमवार 20 सितम्बर 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में आशुकवि विजय गुप्त की प्रथम पुण्यतिथि पर ऑनलाइन प्रेरणा सभा का आयोजन किया गया । यह कॅरोना काल में परिषद का 285 वेबिनार था। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि विजय गुप्त बहुत अच्छे लेखक थे, इसके साथ ही वह साहित्यकार, नाटककार व चित्रकार भी थे। वह एक राष्ट्रवादी चिंतक थे उन्होंने सिख महापुरुषों पर भी लेखन किया। आजीवन आर्थिक अभाव में जिये पर स्वाभिमानी होने के कारण लेखनी व कविताओं से समझौता नहीं किया उनका जीवन एक आदर्श जीवन रहा। अध्यक्षता करते हुए आर्य रविदेव गुप्ता ने कहा कि विजय गुप्त का हर क्षेत्र योगदान अविस्मरणीय रहा वह महर्षि दयानंद जी के अनुगामी रहे निर्धन बच्चों की शिक्षा के लिए भी सराहनीय कार्य किया। राष्ट्रीय कवि प्रो.सारस्वत मोहन मनीषी ने कहा कि विजय जी बहुत अच्छे मित्र थे हमने अनेको कवि सम्मेलनों में सहभागिता की। उन्होंने कहा कि हमे प्रतिदिन अपने मित्रों को फोन कर हाल चाल पूछते रहना चाहिए, कॅरोना ने बता दिया है कि कल का कोई भरोसा नहीं है। वैदिक विद्वान आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उनकी कमी पूर्ति नहीं हो सकती। उनकी सुपुत्री ऋचा गुप्ता ने पिता की स्मृतियों को स्मरण करते हुए आभार व्यक्त किया।

हड्डियों में घिसावट पर आर्य गोष्ठी सम्पन्न

धूप व दूध हड्डियों के लिए अत्यंत आवश्यक –डॉ. रमाकांत गुप्ता (हड्डी रोग विशेषज्ञ)

शनिवार 25 सितम्बर 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में हड्डियों की घिसावट पर ऑनलाइन आर्य गोष्ठी सम्पन्न हुई। यह कॅरोना काल में 288वा वेबिनार था। डॉ. रमाकांत गुप्ता(पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदूराव अस्पताल) ने कहा कि 50 वर्ष की आयु के बाद हड्डियों का भुरना या घिसावट प्रारंभ हो जाती है। व्यक्ति को उठते बैठते पता ही नहीं चलता कब हड्डी टूट जाती है व्यक्ति दूसरों पर निर्भर हो जाता है यह स्थिति कष्ट दायक हो जाती है। इससे बचाव के लिए आवश्यक है कि दूध प्रतिदिन पियें इसमें कैल्शियम की कमी पूरी हो जायेगी। हरी सब्जियों का सेवन, पनीर, प्रतिदिन हल्का व्यायाम,बचपन की स्कूल वाली पीटी लाभकारी रहेंगे। सुबह 7 से 11 के बीच धूप अवश्य ले इनसब से हड्डियों को मजबूती मिलेगी। पुरानी गाड़ी है मेंटिनेंस का ध्यान तो स्वयं रखना ही होगा तभी लंबे समय तक चल पायगे। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि कोई समस्या आते ही डॉक्टर के परामर्श से ही दवाइयों का सेवन करना चाहिए। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि दैनिक योग करने से हम शरीर को स्वस्थ रख सकते हैं। मुख्य अतिथि ओमप्रकाश नागिया व अध्यक्ष गोपाल आर्य ने जीवन शैली सुधारने पर बल दिया उन्होंने कहा कि गाय का दूध सर्वोत्तम है।

शिक्षाविद आशानंद शास्त्री का 120वां जन्मोत्सव सम्पन्न

बुधवार 15 सितम्बर 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में आर्य प्रचारक आशानंद शास्त्री जी का 120वां जन्मोत्सव ऑनलाइन उत्साहपूर्वक मनाया गया। यह कॅरोना काल में 282वां वेबिनार था। मुख्य वक्ता स्वामी आर्य वेश जी (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) ने कहा कि जीवित माता पिता का सम्मान, सेवा सुश्रूषा ही सच्चा श्राद्ध है। आज टूटते परिवार चिंता का विषय है। माता पिता को दुत्कारा जा रहा है उन्हें जीवन यापन के लिए कोर्ट की शरण में जाना पड़ रहा है। ऐसे समय में आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को समाज में पुनः जीवन मूल्य स्थापित करने होंगे जिसमें माता पिता व गुरुवों का सम्मान हो इसके लिए सुसंस्कार देने की आवश्यकता है। यही आशानंद शास्त्री जी को हमारी सही मायनों में श्रद्धांजलि होगी। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि हमारे बुजुर्ग परिवार व समाज की नींव का कार्य करते हैं। उनके आशीर्वाद से सारे कार्य सुगमता पूर्वक सफल होते है। हमारी पुरातन संस्कृति संयुक्त परिवार की रही है जिससे एक दूसरे का सम्मान बना रहता था। परन्तु परिवारों में विभाजन होने से माँ को या पिता को अपने पास कौन रखे एक प्रश्नचिन्ह बनता जा रहा है जो सभ्य समाज पर कलंक है। मुख्य अतिथि बोधराज सीकरी (प्रधान, जामपुरी बिरादरी) ने कहा कि शास्त्री जी का शिक्षा के क्षेत्र में अमूल्य योगदान रहा उनकी विरासत में निर्धन व पिछड़े वर्ग में शिक्षा की निष्काम सेवा की आवश्यकता है। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि हम माता पिता का ऋण कभी नहीं चुका सकते । आर्य नेता पुष्पा शास्त्री व सुरेन्द्र शास्त्री ने आभार व्यक्त किया। साहित्यकार ओम सपरा,विमलेश बंसल, राजेश मेहंदीरत्ता, रमेश गाडी, आचार्य मेघश्याम वेदालंकार,वंदना सचदेवा ने भी अपने विचार रखे। गायिका रजनी चुघ,प्रव ठक्कर, प्रवीन आर्या,रजनी गर्ग,सुदेश आर्या,रेखा गौतम, आशा आर्या,रवीन्द्र गुप्ता आदि ने मधुर भजन प्रस्तुत किये।

तपोवन आश्रम देहरादून चलो.... सीट पहले आओ पहले पाओ

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून का **शरद उत्सव व यज्ञ दिनांक 20 अक्टूबर से 24 अक्टूबर 2021** तक आयोजित किया जा रहा है। इच्छुक श्रद्धालु जन सादर आमंत्रित हैं मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी को फोन कर स्थान आरक्षित कर ले। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद द्वारा आर्य जनता की सुविधा के लिए दो विशेष बस चलाने की व्यवस्था की गई है। एक बस (नॉन ए सी) शुक्रवार 22 अक्टूबर को रात्रि 10 बजे चलेगी प्रातः हरिद्वार पहुंच कर स्नान/भ्रमण इत्यादि के बाद शनिवार 23 को दोपहर तपोवन पहुँचगे। रात्रि तपोवन विश्राम व रविवार 24 अक्टूबर को प्रातः 7 से 1 बजे तक पूर्णाहुति, समापन समारोह के पश्चात दोपहर 2 बजे दिल्ली वापिसी व रात्रि दिल्ली पहुंच जायेगी। प्रति सीट किराया 600/–रु रहेगा। मार्ग में नाश्ता, भोजन सभी स्वयं करेंगे। दूसरी बस वीरवार 21 अक्टूबर रात्रि 10 बजे दिल्ली से चलेगी। प्रातः हरिद्वार होते हुए दोपहर तपोवन आश्रम। 22 व 23 आश्रम उत्सव में सम्मिलित होंगे। **रविवार 24 को दोपहर 2 बजे दिल्ली प्रस्थान। किराया प्रति सीट 700/– रु रहेगा।**

इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें:– 1. महेन्द्र भाई –7703922101, **2.प्रवीन आर्य**–9911404423, **3.अरुण आर्य**–9818530543

–अनिल आर्य,9810117464

यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का 71वां जन्मोत्सव मनाया

मोदी जी राष्ट्रवाद के सच्चे नायक हैं –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

विश्व पटल पर मोदी जी ने भारत का सम्मान बढ़ाया –राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य

शुक्रवार,17 सितम्बर 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का 71 वा जन्मोत्सव 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के रूप में ऑनलाइन मनाया गया और उनकी दीर्घ आयु व स्वस्थ जीवन की प्रार्थना की गई। आज के ही दिन 17 सितम्बर 1948 को सरदार पटेल ने भारतीय सेना भेज कर हैदराबाद के निजाम को हराकर भारत मे विलय करवाया था। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि भारत के ओजस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व की शान है सदियों बाद ऐसा महापुरुष पैदा होता है। हमें उन पर गर्व है। उन्होंने राष्ट्र नायक के रूप में राष्ट्रवाद की नयी अवधारणा लिखी है । चाहे धारा 370 या 35 ए हटाने की बात हो,तीन तलाक जैसे नारी जाति पर अत्याचार की बात हो ,सर्जिकल स्ट्राइक हो और करोड़ो हिन्दुओ के स्वाभिमान का प्रतीक श्री राम मंदिर का शुभ निर्माण कार्य हो सभी असंभव लगने वाले कार्यों को मोदी जी ने अत्यंत कुशलता पूर्वक हल किया है उनकी कर्मठता, सोच, कार्य शैली की जितनी प्रशंसा की जाय वह कम है । उन्होंने लौहपुरुष सरदार पटेल को भी स्मरण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई कि उनके साहस के कारण ही हैदराबाद भारत का हिस्सा बना। भारतीय सेना के आक्रमण के पांच दिन में ही हैदराबाद के निजाम ने घुटने टेक दिए थे और 17 सितम्बर 1948 को शाम 5 बजे भारत में विलय स्वीकार कर लिया। इसलिये यह एकता अखण्डता की रक्षा के संकल्प का दिन है। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि आज मोदी जी के कारण विश्व में भारत का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है । योग दिवस के माध्यम से उन्होंने पूरे विश्व को जोड़ने का अदभुत कार्य किया है। आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, आनन्द प्रकाश आर्य, दुर्गश आर्य, धर्म पाल आर्य, ओम सपरा ने भी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मोत्सव पर स्वस्थ जीवन के लिए शुभकामनाएं दीं। आचार्य महेन्द्र भाई ने कहा कि मोदी जी युवा पीढ़ी के आदर्श है उनकी दिनचर्या, पुरुषार्थ युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत्र है। गायिका प्रवीण आर्या,गीतकार नरेंद्र आर्य सुमन,दीप्ति सपरा, रवीन्द्र गुप्ता,रजनी चुघ,रजनी गर्ग, वीना वोहरा आदि ने गीत सुनाये।

गीत संगीत उत्सव सम्पन्न

कॅरोना काल मे संगीत औषधि है –सतीश नागपाल(CEO,IIFCL)

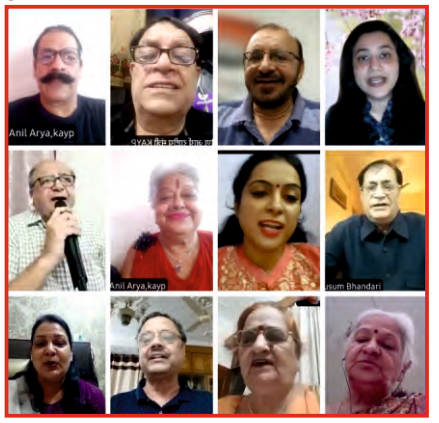

रविवार 19 सितम्बर 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में कॅरोना काल मे तनाव मुक्त करने के लिए प्रफुल्लित व उत्साह के गीतों का कार्यक्रम ऑनलाइन आयोजित किया। यह कॅरोना काल में 284 वा वेबिनार था। मुख्य अतिथि सतीश नागपाल ने कहा कि संगीत कॅरोना काल मे सबसे अच्छी औषधि है, लोग तनावपूर्ण जिंदगी जी रहे है किसी के रोजगार चले गए, कई रिश्तेदार मित्र चले गए बहुत दुःखद काल मे लोग निकले। संगीत ही सच्चा मित्र है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि परिषद निरन्तर विभिन्न विषयों पर वेबिनार करके ज्ञान वर्धन व मनोरंजन करके समाज को जोड़ने का कार्य कर रही है। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि संगीत मानव जीवन के लिए आवश्यक है। गायक नरेन्द्र आर्य सुमन,प्रवीन आर्या,दीप्ति सपरा, नरेश खन्ना, नताशा कुमार, ऋचा गुप्ता, रजनी गर्ग, कमलेश चांदना, करुणा चांदना, जनक अरोड़ा, दया आर्या, प्रवीना ठक्कर, रवीन्द्र गुप्ता, के एल मल्होत्रा, वीरेन्द्र आहूजा, राजकुमार भंड़ारी, रजनी गोयल आदि ने मधुर गीत सुनाये। प्रमुख रूप से उर्मिला आर्या (गुरुग्राम), आस्था आर्या, वीना आर्या, महेंद्र भाई, राजेश मेहंदीरत्ता, सुरेंद्र शास्त्री, संध्या पांडेय, स्नेह अरोड़ा आदि उपस्थित थे।

कोरोना के बाद जटिलताएं पर गोष्ठी सम्पन्न

दूध, पनीर, हल्का व्यायाम व हरी सब्जियां रहेगी लाभकारी –डॉ. सुनील रहेजा

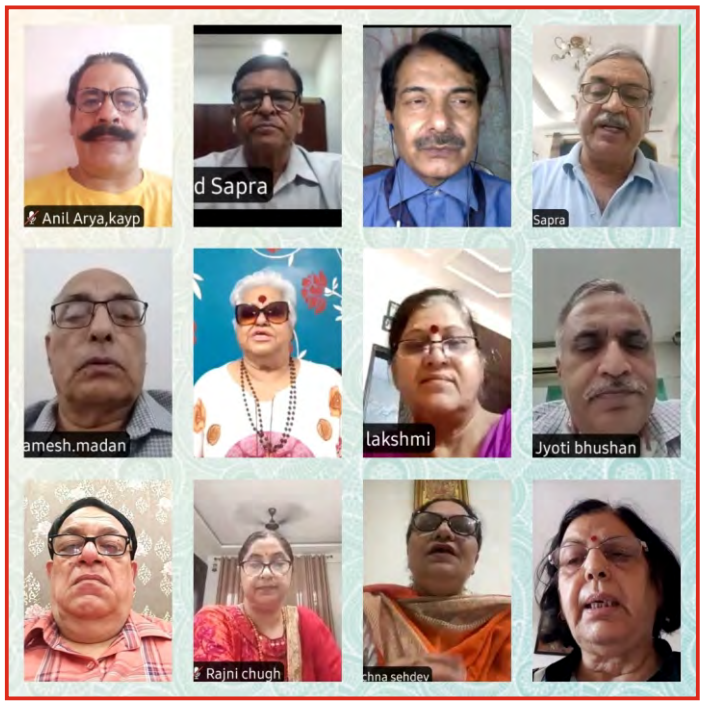

वीरवार 23 सितम्बर 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में कोरोना के बाद की जटिलताएं पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कॅरोना काल में 287 वा वेबिनार था। जी बी पंत अस्पताल नई दिल्ली के एम एस डॉ. सुनील रहेजा ने कहा कि कॅरोना के बाद समस्याए व परेशानियां देखने में आ रही है। कमजोरी, चक्कर आना, नींद न आना व बालो का गिरना जैसी समस्याएं आयी है। रोगी को ठीक होने के बाद 6 महीने तक सावधानी बरतने की आवश्यकता है। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए हरी सब्जियां, दूध, पनीर लाभकारी है। योग व हल्का व्यायाम भी, घर मे सैर भी सहायक रहेगी। अभी आपातस्थिति न हो तो अभी बच्चों को स्कूल नहीं भेजना चाहिए यह विस्फोटक हो सकता है। हमें तीसरी लहर से बचने के लिए मास्क का प्रयोग, हाथ धोते रहना व 6 फुट की दूरी का पालन सख्ती से करना है। उपचार से सावधानी अधिक आवश्यक है। मुख्य अतिथि लायन प्रमोद सपरा व अध्यक्ष रमेश मदान ने कहा कि कॅरोना काल में डॉक्टरों की सेवा का धन्यवाद करते है। वरिष्ठ नागरिकों व रोगियों के भोजन व्यवस्था में हमें सहयोग करना चाहिए व रक्तदान को प्रोत्साहित करना चाहिए। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने संचालन करते हुए कहा कि हमने 287 वेबिनार के माध्यम से लोगो को तनाव मुक्त व ज्ञान वर्धन का पुनीत कार्य किया है। प्रतिदिन सैर, संगीत व डांस से खुश रहा जा सकता है। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि हमने योग और प्राणायाम ऑनलाइन व पार्को में कक्षाओं द्वारा स्वस्थ समाज का निर्माण किया है। गायिका रजनी गर्ग,प्रवीना ठक्कर, प्रवीन आर्या, रजनी चुघ,रवीन्द्र गुप्ता,विजय लक्ष्मी आर्या,रचना सहदेव,निर्मल विरमानी आदि ने मधुर भजन प्रस्तुत किये । प्रमुख रूप से डॉ रचना चावला, करुणा चांदना, महेन्द्र भाई,ओम सपरा, ज्योति ओबरॉय, आस्था आर्या,अमरनाथ बत्रा,गोपाल जैन,डॉ आर के आर्य,डॉ रमाकांत गुप्ता, डॉ विपिन खेड़ा आदि उपस्थित थे।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मा. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970